ज़ानिया औरतें हैं। (مسند امام احمد بن حنبل ج ۷ ص ۲۴۹ حدیث ۲۰۱۱۵ دار الفکر بیروت)

ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जब मर्द मर्द से ह़राम कारी करे तो वोह दोनों[2] ज़ानी हैं और जब औरत औरत से ह़राम कारी करे तो वोह दोनों[2] ज़ानी हैं।

(اَلسُّنَنُ الکُبریٰ ج ۸ ص ۴۰۶ حدیث ۱۷۰۳۳ دار الکتب العلمیۃ بیروت)

ज़ानी को शर्मगाह से लटकाया जाएगा

मरवी हुवा कि ज़बूर शरीफ़ में है : ज़ानियों को उन की शर्मगाहों के ज़रीए जहन्नम में लटकाया जाएगा और लोहे के कोड़ों से मारा जाएगा। जब कोई ज़ानी इस सज़ा से बचने के लिये मदद त़लब करेगा तो फ़िरिश्ते कहेंगे तेरी येह आवाज़ उस वक़्त कहां थी जब तू हंसता था, ख़ुश होता और अकड़ता था। न **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मत को देखता और न ही उस से ह़या करता था। (کتاب الکبائر ص ۵۵)

﴾3﴿ ख़ौफ़नाक शेर

एक शख़्स ने ख़्वाब देखा, कि वोह किसी **जंगल** में चला जा रहा है इतने में पीछे आहट महसूस हुई मुड़ कर देखा तो एक **ख़ौफ़नाक** शेर उस के तआ़कुब में चला आ रहा है, वोह घबरा कर भाग खड़ा हुवा, **शेर** भी पीछे दौड़ा, इतने में एक **गहरा गढ़ा** आड़े आ गया, उस ने गढ़े में झांक कर देखा तो अन्दर एक **बहुत बड़ा सांप** मुंह खोले बैठा नज़र आया ! अब येह बहुत डरा कि करे तो क्या करे ! आगे **ख़त़रनाक सांप** है तो पीछे **ख़ौफ़नाक शेर** ! इतने में उसे एक दरख़्त नज़र आया, येह उस की टहनी से लटक गया लेकिन एक नई मुसीबत खड़ी हो गई, वोह येह कि **एक**

सफ़ेद और एक सियाह चूहा दोनों[2] मिल कर उस टहनी की जड़ को कतर रहे हैं, अब तो येह बहुत घबराया कि अ़न्क़रीब येह दोनों[2] चूहे टहनी काट डालेंगे और मैं गिर जाऊंगा और फिर **शेर** और **सांप** का लुक़्मा बन जाऊंगा। अभी वोह इसी तरद्दुद में था कि उस की नज़र **शहद के छत्ते** पर पड़ी और वोह शहद पीने में मश्ग़ूल हो गया और शहद की लज़्ज़त में कुछ ऐसा गुम हुवा कि न शेर व सांप का ख़ौफ़ रहा, न ही दोनों[2] चूहों का डर। अचानक टहनी जड़ से कट गई और येह धड़ाम से नीचे गिरा, **शेर** उस पर झपटा और उस ने चीर फाड़ कर गढ़े में गिरा दिया और **सांप** उस को निगल गया। फिर आंख खुल गई।

वोह है ऐशो इ़श्रत का कोई महल भी जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी
बस अब अपने इस जहल से तू निकल भी येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़क़ीक़त में दुन्या की लज़्ज़तें ख़्वाब की त़रह़ हैं जो इस की रंगीनियों में खोया हुवा है वोह यक़ीनन ग़फ़्लत की नींद सोया हुवा है, मौत आने पर वोह जाग उठेगा। मज़्कूरा बाला ख़्वाब में जंगल से मुराद दुन्या है और **ख़ौफ़नाक शेर** मौत है, जो पीछे लगी हुई है, गढ़ा क़ब्र है जो आगे है, वोह सांप बुरे आ'माल हैं जो क़ब्र में डसेंगे और दो[2] **सफ़ेद व सियाह चूहे** दिन और रात हैं और वोह टहनी ज़िन्दगी है, जिसे वोह काट रहे हैं और शहद का छत्ता दुन्या की फ़ानी लज़्ज़ात हैं, जिन में मश्ग़ूल हो कर इन्सान **शेर** (या'नी मौत), **गढ़ा** (या'नी

क़ब्र), **सांप** (या'नी सज़ाए आ'माले बद) और **सियाह व सफ़ेद चूहों** (या'नी दिन और रात) को भूल जाता है मगर वोह दोनों[2] चूहे (या'नी दिन और रात) मिल कर उस की ज़िन्दगी की टहनी को बराबर कतरते रहते हैं, जूं ही उस की मुद्दत पूरी होती है, वोह मौत का शिकार हो जाता है।

हुस्ने ज़ाहिर पर अगर तू जाएगा आ़लमे फ़ानी से धोका खाएगा
येह मुनक़्क़श सांप है डस जाएगा रह न ग़ाफ़िल याद रख पछताएगा
एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

﴾4﴿ पुल सिरात़ की दहशत

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की एक कनीज़ ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मैं ने ख़्वाब में देखा कि जहन्नम को दहकाया गया है और उस पर **पुल सिरात़** रख दिया गया है। इतने में **उमवी ख़ुलफ़ा** को लाया गया। सब से पहले ख़लीफ़ा **अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान** को हुक्म हुवा कि **पुल सिरात़** से गुज़रो, वोह **पुल सिरात़** पर चढ़ा, मगर आह ! देखते ही देखते दोज़ख़ में गिर पड़ा। फिर उस के बेटे **वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक** को लाया गया, वोह भी दोज़ख़ में जा गिरा। इस के बा'द **सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक** को ह़ाज़िर किया गया और वोह भी इसी त़रह़ दोज़ख़ में गिर गया। इन सब के बा'द या अमीरल मुअमिनीन ! आप को लाया गया, बस इतना सुनना था कि **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़ौफ़ज़दा हो कर चीख़ मारी और गिर पड़े। कनीज़ ने पुकार कर कहा : या अमीरल

मुअमिनीन ! सुनिये भी तो...... ख़ुदा की क़सम ! मैं ने देखा कि आप ने सलामती के साथ **पुल सिरात़** को उ़बूर कर लिया। मगर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه **पुल सिरात़ की दहशत** से बेहोश हो चुके थे और इसी आ़लम में इधर उधर हाथ पाउं मार रहे थे।

(اِحیاءُ الْعُلُوم ج ۴ص ۲۳۱دارصادربیروت)

पुल सिरात़ तलवार की धार से तेज़ तर है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ालां कि ग़ैरे नबी का ख़्वाब शरीअ़त में **हुज्जत** नहीं। फिर भी आप ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه **पुल सिरात़** पर गुज़रने के मुआ़मले में किस क़दर ह़स्सास थे। वाक़ेई **पुल सिरात़** का मुआ़मला बड़ा ही नाज़ुक है। पुल सिरात़ बाल से बारीक और तलवार की धार से तेज़ तर है और येह जहन्नम की पुश्त पर रखा हुवा होगा, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह सख़्त तशवीशनाक मरह़ला है, हर एक को उस पर से गुज़रना ही पड़ेगा।

सह़ाबी का रोना

पुल सिरात़ का मरह़ला आसान नहीं, हमारे अस्लाफ़ इस ज़िम्न में बेह़द मुतफ़क्किर और मग़्मूम रहा करते थे चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को एक बार रोते देख कर उन की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : आप को

किस बात ने रुलाया ? फ़रमाया : मुझे (पारह 16 सूरए मरयम में वारिद शुदा) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान याद आ गया, وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो) येह तो जान लिया कि मैं ने उस में दाख़िल होना है लेकिन येह नहीं जानता कि मैं उस से नजात भी ह़ासिल कर सकूंगा या नहीं।

(اَلْمُسْتَدْرَک لِلْحاکِم ج ۴ ص ۶۳۱ حدیث ۸۷۴۸، اَلتَّخویف مِنَ النَّار ص ۲۴۹)

वारिदुहा से मुराद

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ मरह़बा ! **सूरए मरयम** की आयत नम्बर 71 में लफ़्ज़, ''वारिदुहा'' (या'नी दोज़ख़ से गुज़रने के बारे में) ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا और सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه वग़ैरा के ख़याल में बात येह थी कि क़ुरआने करीम के इन अल्फ़ाज़ में ''वारिदुहा'' के मा'ना **دَاخِلُهَا** (या'नी दोज़ख़ में दाख़िल होने) के हैं।''

(مرقاۃ المفاتیح ج ۱۰ ص ۵۹۹ تحت الحدیث ۶۲۲۷، اَلتَّخویف مِنَ النَّار ص ۲۴۹، البدور السّافرۃ ص ۳۳۸)

पुल सिरात़ पन्दरह ह़ज़ार साल की राह है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम पर रह़्म फ़रमाए, **पुल सिरात़** का सफ़र निहायत ही त़वील है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मन्क़ूल है : **पुल सिरात़** का सफ़र पन्दरह[15] ह़ज़ार साल की राह है, पांच ह़ज़ार साल ऊपर चढ़ने के, पांच[5] ह़ज़ार साल नीचे उतरने के और पांच ह़ज़ार साल बराबर के। **पुल सिरात़**

बाल से ज़ियादा बारीक और तलवार से तेज़ तर है और वोह जहन्नम की पुश्त पर बना हुवा है उस पर से वोह गुज़र सकेगा जो **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ के बाइस कमज़ोर व निढाल होगा। (البدورالسّافرة ص ۳۴۴ دارالکتب العلمیه بیروت)

पुल सिरात़ से गुज़रने का मन्ज़र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तसव्वुर कीजिये ! उस वक़्त क्या गुज़र रही होगी जब मैदाने क़ियामत में सूरज सवा मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, भेजे खौल रहे होंगे, कलेजे फट गए होंगे दिल उबल कर गले में आ गए होंगे ऐसे दर्दनाक ह़ालात में **पुल सिरात़** से गुज़रने का मरह़ला दरपेश होगा। इस से गुज़रने के लिये दुन्यवी त़ाक़तवर व बॉक्सर, कड़ियल नौ जवान व पहलवान, तेज़ व त़र्रार व सुबुक रफ़्तार, ख़लाबाज़ व कराटे बाज़, और हट्टे कट्टे मुस्टन्डे होने की ह़ाजत नहीं बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान के मुत़ाबिक़ **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ के सबब कमज़ोर व ज़ार और नह़ीफ़ व नज़ार रहने वाले **पुल सिरात़** को ब आसानी पार कर लेंगे।

हर एक पुल सिरात़ से गुज़रेगा

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझे उम्मीद है कि जो ग़ज़्वए बद्र और हुदैबिया में ह़ाज़िर थे वोह आग में दाख़िल नहीं होंगे। मैं ने अ़र्ज़ की : **या**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या **अल्लाह** तआ़ला ने येह नहीं फ़रमाया :

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿۷۱﴾

(پارہ ۱۶ سورۂ مریم ۷۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर येह ज़रूर ठहरी हुई बात है।

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, क्या तूने नहीं सुना :

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ﴿۷۲﴾

(پارہ ۱۶ سورۂ مریم ۷۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर हम डर वालों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे।

(سُنَن ابنِ ماجه ج ۴ ص ۵۰۸ حدیث ۴۲۸۱ دارالمعرفة بیروت)

मुजरिमीन जहन्नम में गिर पड़ेंगे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि हर एक को दोज़ख़ से गुज़रना होगा। **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ रखने वाले मुअमिनीन बचा लिये जाएंगे और मुजरिमीन व ज़ालिमीन जहन्नम में गिर पड़ेंगे। आह! आह! आह! इन्तिहाई दुश्वार मुआ़मला है, हाए! हाए! फिर भी हम ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार नहीं होते।

दिल हाए गुनाहों से बेज़ार नहीं होता मग़्लूब शहा नफ़्से बदकार नहीं होता
येह सांस की माला अब बस टूटने वाली है ग़फ़्लत से मगर दिल क्यूं बेदार नहीं होता
गो लाख करूं कोशिश इस्लाह नहीं होती पाकीज़ा गुनाहों से किरदार नहीं होता

ऐ रब के ह़बीब आओ ऐ मेरे त़बीब आओ

अच्छा येह गुनाहों का बीमार नहीं होता

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द **सुन्नतें और आदाब** बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है **:** जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (مِشْکاۃُ الْمَصابِیح ،ج ۱ ص ۵۵ حدیث ۱۷۵ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें

नेक हो जाएं मुसल्मान मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"चल मदीना" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से जूते पहनने के 7 मदनी फूल

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **: (1)** जूते ब कसरत इस्ति'माल करो कि आदमी जब तक जूते पहने होता है गोया वोह सुवार होता है। (या'नी कम थकता है) (مسلم ص ۱۱۶۱ حدیث ۲۰۹۶) **(2)** जूते पहनने से पहले झाड़ लीजिये ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए **(3)** पहले सीधा जूता पहनिये फिर उलटा और उतारते वक़्त पहले उलटा जूता उतारिये फिर सीधा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम में से कोई जूते पहने तो दाईं (या'नी सीधी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये और जब उतारे तो बाईं (या'नी उलटी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये ताकि दायां (या'नी सीधा) पाउं पहनने में अव्वल और उतारने में आख़िरी रहे। **(بخاری ج ٤ ص ٦٥ حدیث ٥٨٥٥)**

नुज़्हतुल क़ारी में है : मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त हुक्म येह है पहले सीधा पाउं मस्जिद में रखे और जब मस्जिद से निकले तो पहले उलटा पाउं निकाले। मस्जिद के दाख़िले के वक़्त इस ह़दीस पर अ़मल दुश्वार है। **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने इस का ह़ल येह इर्शाद फ़रमाया है : जब मस्जिद में जाना हो तो पहले उलटे पाउं को निकाल कर जूते पर रख लीजिये फिर सीधे पाउं से जूता निकाल कर मस्जिद में दाख़िल हो। और जब मस्जिद से बाहर हो तो उलटा पाउं निकाल कर जूते पर रख लीजिये फिर सीधा पाउं निकाल कर सीधा जूता पहन लीजिये फिर उलटा पहन लीजिये। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 5, स. 530, फ़रीद बुक स्टॉल) **(4)** मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना जूता इस्ति'माल करे **(5)** किसी ने **ह़ज़रते** सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से कहा कि एक औ़रत (मर्दों की त़रह़) जुते पहनती है। उन्हों ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मर्दानी औ़रतों पर ला'नत फ़रमाई है। **(ابو داود ج ٤ ص ٨٤ حدیث ٤٠٩٩) सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते

हैं : या'नी औ़रतों को मर्दाना जूता नहीं पहनना चाहिये बल्कि वोह तमाम बातें जिन में मर्दों और औ़रतों का इम्तियाज़ होता है इन में हर एक को दूसरे की वज़्अ़ इख़्तियार करने (या'नी नक़्क़ाली करने) से मुमानअ़त है, न मर्द औ़रत की वज़्अ़ (त़र्ज़) इख़्तियार करे, न औ़रत मर्द की। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 65, मक्तबतुल मदीना) **(6)** जब बैठें तो जूते उतार लीजिये कि इस से क़दम आराम पाते हैं **(6)** (तंगदस्ती का एक सबब येह भी है कि) औंधे जूते को देखना और उस को सीधा न करना ''दौलते बे ज़वाल'' में लिखा है कि अगर रात भर जूता औंधा पड़ा रहा तो शैत़ान उस पर आन बैठता है वोह उस का तख़्त है। (सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर, ह़िस्सा : 5, स. 596) इस्ति'माली जूता उलटा पड़ा हो तो सीधा कर दीजिये। **त़रह़** त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ दो कुतुब ''बहारे शरीअ़त'' ह़िस्सा 16 (304 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे बरकतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दूसरी मन्ज़िल से बच्चा गिर पड़ा !

तरग़ीब व तह़रीस के लिये मदनी क़ाफ़िले की एक अनोखी मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे बाबुल मदीना के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : मुह़र्रमुल ह़राम सि. 1425 हि. में मेरे भान्जे के अब्बू **आशिक़ाने रसूल** के साथ 12 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर थे। इसी दौरान उन का दो सालह **मदनी मुन्ना** इमारत की दूसरी मन्ज़िल से गिर पड़ा। मह़ल्ले वाले घबरा कर दौड़ पड़े कि इतनी बुलन्दी पर से गिरने वाला बच्चा कहां ज़िन्दा बचेगा। मगर लोगों की ह़ैरत की उस वक़्त इन्तिहा न रही जब देखा कि वोह मदनी मुन्ना रोता हुवा सह़ीह़ सलामत खड़ा हो गया है ! जब **मदनी मुन्ने** के अब्बु **मदनी क़ाफ़िले** से लौट कर घर आए और अपने **मदनी मुन्ने** को बिल्कुल ठीक ठाक पाया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया। उन का येह ज़ेह्न बना कि येह सब **मदनी क़ाफ़िले** की बरकत है जो ऐसा ज़िन्दा करिश्मा देखने को मिला। चुनान्चे उन्हों ने उसी वक़्त येह निय्यत की, कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ 12 माह में 12 दिन के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र करूंगा।

रब ह़िफ़ाज़त करे और किफ़ायत करे गा तवक्कुल करें क़ाफ़िले में चलो
ह़ादिसा हो कोई आरिज़ा हो कोई सब सलामत रहें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के मुसाफ़िरों की तो क्या बात है ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें किसी को तन्हा नहीं छोड़तीं। **अल्लाहु करीम** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत बहुत ही अ़ज़ीम है। दूसरी[2] मन्ज़िल से गिरने वाले बच्चे का यूं सलामत रह जाना यक़ीनन करिश्मए क़ुदरत है। आइये इस से भी ज़ियादा ह़ैरत अंगेज़ ह़िकायत मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे,

क़ब्र से बच्चा ज़िन्दा बर आमद हुवा !

एक शख़्स अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमते बा बरकत में अपने बेटे के साथ आया। बेटे की सूरत हू ब हू अपने वालिद से मिलती थी। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन को देख कर फ़रमाया कि मैं ने इन बाप बेटों के दरमियान जितनी मुशाबहत देखी इस से पहले कभी किसी और में नहीं देखी। वालिद ने अ़र्ज़ की : आ़लीजाह ! इस बच्चे का वाक़िआ़ निहायत ही अ़जीबो ग़रीब है। मैं सफ़र पर जाने लगा तो येह बच्चा मां के पेट में था, बीवी ने कहा : तुम इस को किस के सिपुर्द कर के जा रहे हो ? मैं ने कहा : **''मैं ने इस को अल्लाह तआ़ला عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द किया।''** जब सफ़र से लौट कर आया तो घर को मुक़फ़्फ़ल (बन्द) पाया। जब मा'लूमात कीं तो पता चला कि बीवी का इन्तिक़ाल हो चुका है, मैं फ़ातिह़ा पढ़ने उस की क़ब्र पर गया तो एक **रोशन शो'ला** उस की क़ब्र पर देखा।

मैं ने सोचा बीवी तो नेक थी येह शो'ला कैसा ? मैं ज़रूर खोद कर देखूंगा। **जब क़ब्र खोदी तो क्या देखता हूं कि उस में चांद सा मदनी मुन्ना मौजूद है जो मरी हुई मां के इर्द गिर्द उछल कूद कर खेल रहा है !** ग़ैब से आवाज़ आई : "येह वोह बच्चा है जिस को तूने सफ़र पर जाते वक़्त हमारे सिपुर्द किया था, ले अमानत संभाल, अगर बीवी को भी हमारे सिपुर्द कर जाता तो वोह भी तुझ को मिल जाती।" (فُتُوحاتُ الرَّبّانِيّه)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक्तबतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।